रोला

लक्षण —

यह सम मात्रिक छन्द है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं। 11 और 13 पर यति होती है।

उदाहरण —

S I S I I S I S I I I I I I S I I
कोउ पापिह पँचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।

I I I I S I I S I I I I S S I I S I I
बनि बनि बावन बीर, बढ़त चौचंद मचावत॥

S I I S S S I I I I S S I I S I I
पै तकि ताकी लोथ, त्रिपथगा के पथ लावत।

S S S I I S I S I S I I I I S I I
नौ द्वै ग्यारह होत, तीनि पाँचहि बिसरावत॥

उठो–उठो हे वीर, आज तुम निद्रा त्यागो।
करो महा संग्राम, नहीं कायर हो भागो।।
तुम्हें वरेगी विजय, अरे यह निश्चय जानो।
भारत के दिन लौट, आयगे मेरी मानो।।

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।

सूर्य-चन्द्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकर है।

नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारा-मंडल है।

बंदीजन खगवृन्द, शेष-फन सिंहासन है।

जीती जाती हुई जिन्होंने भारत बाजी । निज बल से बल मेट विधर्मी मुगल कुराजी ।। जिनके आगे ठहर सके जंगी जहाजी । है, ये वही प्रसिद्ध छत्रपति भूप शिवाजी ।।

हरिगीतिका

लक्षण :—

यह एक सममात्रिक छन्द है। चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 28-28 मात्राएँ होती हैं। 16 व 12 पर यति होती है, प्रत्येक चरण के अन्त में रगण (SIS) आना आवश्यक है।

Trick ——

7 + 7 + 7 + 7 = 28

हरिगीतिका हरिगीतिका हरिगीतिका हरिगीतिका।

I I S I S

Example —

I I S I S S S I S I I I I I S S S I S

खग वृन्द सोता है अत: कलकल नहीं होता वहाँ।

I I S I S I I S I I I S S I S S S I S

बस मंद मारुत का गमन ही मौन है खोता जहाँ॥

I I S I S S S I S I I I I I I I S S I S

इस भाँति धीरे से परस्पर कह सजगता की कथा।

S S I S S S I S S S I S I I S I S

यों दीखते हैं वृक्ष ये हों विश्व के प्रहरी यथा॥

अन्याय सहकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है ।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी, दण्ड देना धर्म है।

खग बृंद सोता है अतः कल, कल नही होता वहाँ ।

बस मंद मारूत का गमन ही, मौन ही होता जहाँ ।

कहती हुई यों उत्तरा के; नेत्र जल से भर गये।

हिम के कणों से पूर्ण मानों, हो गये पंकज नये ।।

बरवै

लक्षण —

यह एक अर्द्धसममात्रिक छन्द है। इसके चार चरण होते हैं। इसके प्रथम व तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ होती हैं तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण (ISI) होता है।

उदाहरण —

चंपक हरवा अँग मिलि, अधिक सुहाय।
S I I I I S I I I I, I I I I S I

जानि परै सिय हियरे, जब कुँभिलाय॥
S I I S I I I I S, I I I I S I

अब जीवन कै है कपि, आस न कोय।

कनगुरिया कै मुदरी, कंकन होय।।

सम सुबरन सुषमाकर, सुखद न थोर।

सीय अंग सखि कोमल, कनक कठोर।।